10

बिहारीलाल

कविवर बिहारीलाल हिन्दी साहित्य के अंतर्गत रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। हिन्दी के समस्य कवियों में भी आप अग्रिम पंक्ति के अधिकारी हैं। उन्होंने प्रमुख रूप से प्रेम-शृंगार और गौण रूप से भक्ति एवं नीति के दोहों की रचना करके अपार लोकप्रियता प्राप्त की थी। उनकी यह लोकप्रियता आज भी बनी हुई है और आगे भी बनी रहेगी।

कवि बिहारी का जन्म 1595 ई. में ग्वालियर के निकट बसुवा गोविन्दपुर नामक गाँव में हुआ था। पिता केशवराय के गुरु महन्त नरहरिदास के यहाँ बिहारी को संस्कृत और पराकृत के प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथों के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ था। तत्कालीन दरबारी भाषा फारसी में भी अधिकार प्राप्त करके वे अपनी एक फारसी रचना के साथ कलाप्रिय मुगल बादशाह शाहजहाँ से मिले थे। बिहारी की काव्य-प्रतिभा से सम्राट बड़े ही प्रसन्न हुए और उनके कृपापात्र बने। अब तो कवि बिहारी का संपर्क मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ अन्य राजाओं से भी हुआ। कई राज्यों से उनको वृत्ति मिलने लगी। 1645 ई. के आस-पास वे वृत्ति लेने जयपुर पहुँचे थे। वहाँ के महाराज जयसिंह और चौहानी रानी के आग्रह पर कवि बिहारी जयपुर में ही रुक गए तथा प्रत्येक दोहे के लिए एक अशर्फी की शर्त पर काव्य-रचना करने लगे। 1662 ई. तक उनकी 'सतसई' पूरी हुई। 1663 ई. में कविवर बिहारी का देहावसान हुआ।

कवि बिहारीलाल की ख्याति का आधार उनका एकमात्र 'सतसई' ग्रंथ है, जो **बिहारी सतसई** नाम से प्रसिद्ध है। यह लगभग सात सौ दोहों का अनुपम संग्रह है। इसे श्रृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी भी कहते हैं। इस ग्रंथ की लोकप्रियता के संदर्भ में यूरोपीय विद्वान डॉ. ग्रियर्सन ने कहा है कि यूरोप में इसके समकक्ष कोई भी रचना नहीं है। गागर में सागर भरने के समान कविवर बिहार ने दोहे जैसे छोटे-से छंद में लंबी-चौड़ी बात भी संक्षेप में कह दी है। सरस, सुमधुर और प्रौढ़ ब्रजभाषा में रचित ये दोहे काव्य-रसिकों पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। इसीलिए लोकोक्ति प्रचलित है -

'सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगै घाव करै गंभीर॥'

≈ ***'दोहा दशक'*** *शीर्षक के अन्तर्गत संकलित प्रथम पाँच दोहे भक्तिपरक और शेष पाँच दोहे नीतिपरक हैं। कविवर बिहारी द्वारा रचित भक्ति-नीति के दोहे संख्या की दृष्टि से कम होने पर भी भाव, भाषा और अभिव्यक्ति भंगिमा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।*

दोहा-दशक

सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल ॥1 ॥

कोऊ कोरिक संग्रहो, कोऊ लाख हजार।
मो संपति जदुपति सदा, बिपति बिदारनहार ॥ 2 ॥

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ॥
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ ॥ 3 ॥

जप-माला, छापैं, तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन काँचे नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु ॥ 4 ॥

कीजै चित सोई तरे, जिहि पतितनु के साथ।
मेरे गुन-औगुन-गननु, गनौ न गोपीनाथ ॥ 5 ॥

चटक न छाँड़तु घटत हूँ, सज्जन नेहु गंभीरु।
फीको परै न बरु घटै, रंग्यौं चोल रंगु चीरु ॥ 6 ॥

न ए बिससिये लखि नये, दुर्जन दुसह सुभाय।
आँटे पर प्रानन हरै, काँटे लौं लगि पाय ॥ 7 ॥

कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाए बौराइ जगु। इहिं पाएँ बौराइ ॥ 8 ॥

मीत न नीत गलीत है, जो धरियै धन जोरि।
खाएँ खरचैं जो जुरै, तो जोरिए करोरि ॥ 9 ॥

ओछे बड़े न ह्वै सकैं, लगौ सतर ह्वै गैन।
दीरघ होंहि न नैंक हूँ, फारि निहारै नैन ॥10 ॥

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) कवि बिहारीलाल किस काल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं ?

(1) आदिकाल के (2) रीतिकाल के

(3) भक्तिकाल के (4) आधुनिक काल के

(ख) कविवर बिहारी की काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होने वाले मुगल सम्राट थे –

(1) औरंगजेब (2) अकबर

(3) शाहजहाँ (4) जहाँगीर

(ग) कवि बिहारी का देहावसान कब हुआ ?

(1) 1645 ई. को (2) 1660 ई. को

(3) 1662 ई. को (4) 1663 ई को

(घ) श्रीकृष्ण के सिर पर क्या शोभित है ?

(1) मुकुट (2) पगड़ी

(3) टोपी (4) चोटी

(ङ) कवि बिहारी ने किन्हें सदा साथ रहने वाली संपत्ति माना है ?

(1) राधा को (2) श्रीराम को

(3) यदुपति कृष्ण को (4) लक्ष्मी को

2. **निम्नलिखित कथन शुद्ध हैं या अशुद्ध, बताओ :**

(क) हिन्दी के समस्त कवियों में भी बिहारीलाल अग्रिम पंक्ति के अधिकारी हैं।

(ख) कविवर बिहारी को संस्कृत और प्राकृत के प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथों के अध्ययन का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था।

(ग) 1645 ई. के आस-पास कवि बिहारी वृत्ति लेने जयपुर पहुँचे थे।

(घ) कवि बिहारी के अनुसार ओछा व्यक्ति भी बड़ा बन सकता है।

(ङ) कवि बिहारी का कहना है कि दुर्दशाग्रस्त होने पर भी धन का संचय करते रहना कोई नीति नहीं है।

3. **पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :**

(क) कवि बिहारी ने मुख्य रूप से कैसे दोहों की रचना की है ?

(ख) कविवर बिहारी किनके आग्रह पर जयपुर में ही रुक गए ?

(ग) कवि बिहारी की ख्याति का एकमात्र आधार-ग्रंथ किस नाम से प्रसिद्ध है।

(घ) किसमें किससे सौ गुनी अधिक मादकता होती है ?

(ङ) कवि ने गोपीनाथ कृष्ण से क्या-क्या न गिनने की प्रार्थना की है ?

4. **अति संक्षेप्त में उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :**

(क) किस परिस्थिति में कविवर बिहारी काव्य-रचना के लिए जयपुर में ही रुक गए थे ?

(ख) 'यहि बानक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल' – का भाव क्या है ?

(ग) 'ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होई' – का आशय स्पष्ट करो।

(घ) 'आँटे पर प्रानन हरै, काँटे लौं लगि पाय' – के जरिए कवि क्या कहना चाहते हैं ?

(ङ) 'मन काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै राम' – का तात्पर्य बताओ।

5. संक्षेप्त में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) कवि के अनुसार अनुरागी चित्त का स्वभाव कैसा होता है ?

(ख) सज्जन का स्नेह कैसा होता है ?

(ग) धन के संचय के संदर्भ में कवि ने कौन-सा उपदेश दिया है ?

(घ) दुर्जन के स्वभाव के बारे में कवि ने क्या कहा है ?

(ङ) कवि बिहारी किस वेश में अपने आराध्य कृष्ण को मन में बसा लेना चाहते हैं ?

(च) अपने उद्धार के प्रसंग में कवि ने गोपीनाथ कृष्णजी से क्या निवेदन किया है ?

(छ) कवि बिहारी की लोकप्रियता पर एक संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करो।

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) कवि बिहारीलाल का साहित्यिक परिचय दो।

(ख) 'बिहारी सतसई' पर एक टिप्पणी लिखो।

(ग) कवि बिहारी ने अपने भक्तिपरक दोहों के माध्यम से क्या कहा है ? पठित दोहों के आधार पर स्पष्ट करो।

(घ) पठित दोहों के आधार पर बताओ कि कवि बिहारी के नीतिपरक दोहों का प्रतिपाद्य क्या है ?

7. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(का) 'कोऊ कोरिक संग्रहो .... बिपति बिदारनहार॥'

(ख) 'जय-माला, छापैं, तिलक .... साँचै राँचै रामु॥'

(ग) 'कनक कनक तैं सौ गुनी .... इहिं पाएँ बौराइ॥'

(घ) 'ओछे बड़े न ह्वै सकैं .... फारि निहारै नैन।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क) संधि-विच्छेद करो :

देहावसान, लोकोक्ति, उज्ज्वल, सज्जन, दुर्जन

(ख) विलोम शब्द लिखो :

अनुराग, पाप, गुण, प्रेम, सज्जन, मित्र, गगन, श्रेष्ठ

(ग) निम्नलिखित दोहों को खड़ीबोली (मानक हिन्दी) गद्य में लिखो :

मीत न नीत गलीत ह्वै, जो धरियै धन जोरि।
खाए खरचैं जो जुरै, तौ जोरिए करोरि॥
न ए बिससिये लखि नये, दुर्जन दुसह सुभाय।
आँटे पर प्रानन हरै, काँटे लौं लगि पाय॥

(घ) निम्नलिखित समस्त-पदों का विग्रह करके समास का नाम बताओ :

सतसई, गोपीनाथ, गुन-औगुन, काव्य-रसिक, आजीवन

(ङ) अंतर बनाए रखते हुए निम्नलिखित शब्द-जोरों के अर्थ बताओ :

कनक-कनक, हार-हार, स्नेह-स्नेह, हल-हल, कल-कल

योग्यता-विस्तार

(क) पठित दोहों को कंठस्थ करके अपने माता-पिता को सुनाओ।

(ख) कवि बिहारीलाल द्वारा रचित अन्य दोहों का संग्रह करके कक्षा में अंत्याक्षरी का खेल खेलो।

(ग) 'ज्यों-ज्यों बड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होई॥'
'कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।'
– उपरोक्त काव्य-पंक्तियों में आए अलंकारों के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करो।

(घ) 'दोहा' छंद की विशेषता के बारे में अपने शिक्षक से जान लो।

(ङ) कवि बिहारी द्वारा रचित निम्नलिखित शृंगारपरक दोहों का भाव अपने शिक्षक की सहायता से जानने का प्रयास करो :

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सब बात॥ 1॥

बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ। ॥ 2॥

औंधाई सीसी सु लखि, बिरह बरति बिललात।
बीचहिं सूखि गुलाबु गौ, छींटौ छुयौ न गात। ॥ 3॥

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

(1)

सीस	=	सिर
कटि	=	कमर
काछनी	=	पीतांबर, घुटनों तक पहनी हुई धोती
कर	=	हाथ
माल	=	माला, वैजयंती माला
उर	=	वक्षस्थल
बानक	=	वेश, रूप, बनाव
मो	=	मेरा
बसौ	=	निवास कीजिए, बसा हुआ है
बिहारीलाल	=	कृष्ण, कवि का नाम

(2)

कोऊ	=	कोई
कोरिक	=	करोड़
संग्रहो	=	संग्रह/एकत्र करना
मो		मेरी

संपति	=	संपत्ति
जदुपति	=	यदुपति, कृष्ण
बिपति	=	विपत्ति, विपदा
बिदारनहार	=	नष्ट/दूर करने वाला

(3)

या	=	इस
अनुरागी	=	अनुरगगमयी, प्रेमी, लाल
चित्त	=	हृदय
गति		स्वभाव
नहिं	=	नहीं
बूड़ै	=	डूबता है
स्याम	=	कृष्ण, काला
उज्जलु	=	उज्ज्वल, पवित्र, श्वेत

(4)

जप	=	मंत्र का स्मरण
छापैं	=	शरीर के किसी अंग पर चित्र बना लेना
तिलक	=	टीका, मस्तक पर चंदन आदि का चिह्न लगाना
सरै		सिद्ध होना
न	=	नहीं
एकौ	=	एक भी
कामु	=	काम, कार्य
काँचै	=	कच्चा, काँच का, चंचल
बृथा	=	बेकार
साँचै	=	सच्चा, साँचा, दृढ़
राँचै	=	निचस करके प्रसन्न होता है
रामु	=	रामजी, आराध्य

(5)

कीजै	=	कीजिए, करुणा लाइए
चित	=	चित्त/हृदय में

सोई	=	वही
तरे	=	उद्धार हो
जिहि पतितनु के साथ	=	जैसा बर्ताव अन्य पापियों के साथ किया
गुन	=	गुण, अच्छाई
औगुन	=	अवगुण, दोष, बुराई
गननु	=	समूहों को
गनौ न	=	न गिनिए, गणना मत कीजिए
गोपीनाथ	=	गोपियों के नाथ श्रीकृष्ण

(6)

चटक	=	चमक, सहानुभूति
न छाँड़तु	=	नहीं छोड़ता
घटत हूँ	=	गंभीरता घटने पर भी
सज्जन	=	सत्पुरुष
नेहु	=	स्नेह, प्यार
गंभीरु	=	गंभीरता, गहराई
फीको परे न	=	फीका नहीं पड़ता,
	=	निष्प्रभ नहीं होता
बरु	=	भले ही
घटे	=	ह्रास हो, फट जाए
रंग्यौ	=	रँगा हुआ
चोल	=	मंजिष्ठ, मंजीठ
रंगु	=	रंग से
चीरु	=	चीर, वस्त्र, कपड़ा

(7)

न ए बिससिये	=	इन पर विश्वास न कीजिए
लखि	=	देखकर, देखते ही
नये	=	नम्र होते हुए
दुर्जन	=	दुष्ट लोग

दुसह	=	दुस्सह
सुभाय	=	स्वभाव
आँटे पर	=	अंटे/दुःख में पड़ने पर, अवसर मिलने पर
प्रानन हरै	=	प्राणों का हरण करते हैं
काँटै	=	काँटा
लौं	=	की तरह, के समान
लगि पाय	=	पाँव/पैर में चुभकर

(8)

कनक	=	सोने/स्वर्ण में, धन-संपत्ति में
कनक तैं	=	धतूरे से
मादकता	=	उन्मत्तता, बावलापन, पागल बनाने की क्षमता
अधिकाइ	=	अधिक, ज्यादा होती है
उहिं	=	उसे, धतूरे को
खाए	=	खाने पर
बौराए	=	पागल होता है
जगु	=	जगत, दुनिया
इहिं	=	इसे, सोने को
पाएँ	=	पाने पर ही
बौराइ	=	पागल हो/अहंकार से भर जाता है

(9)

मीत	=	मित्र, दोस्त
न नीत	=	नीति नहीं है
गलीत ह्वै	=	दुर्दशाग्रस्त होने पर भी
जो धरियै	=	जो रखा जाए
धन जोरि	=	धन/रुपये-पैसे का संचय करके
खाए खरचैं जो जुरै	=	खाने और खर्च करने के बाद अगर बच जाए
तौ	=	तो, उस स्थिति में
जोरिए	=	संचय कीजिए
करोरि	=	करोड़ की संख्या में

(10)

ओछे	=	छोटा/निकृष्ट व्यक्ति, नीचे स्वभाव वाला
बड़े	=	बड़ा, महान
न ह्वै सकैं	=	नहीं हो सकता
लगौ	=	लग जाए, छू ले
सतर ह्वै	=	ऊँचा होकर, बढ़ कर
गैन	=	गगन, आकाश
दीरघ	=	दीर्घ, बड़ा, विशाल
होंहि न	=	हो नहीं पाता
नैंक हूँ	=	कभी भी
फारि निहारै	=	फाड़ कर देखा जाए, बड़ा करके देखा जाए
नैन	=	नयन, आँख
दीरघ होंहि ...निहारे नैन	=	आँखों को भले ही फाड़कर देखा जाए परंतु वे कभी भी अपने स्वाभाविक आकार से बड़ी नहीं हो पातीं